कार्यानुभव प्रभाग

प्रभाग का परिचय :–

शिक्षा का उद्देश्य है बालक का सर्वागीण विकास करना। बालक की शिक्षा ऐसी हो जिसके द्वारा न केवल बौद्धिक विकास हो बस सृजनशीलता क्रियात्मक क्षमताओं, स्वास्थ्य, व्यायाम, योग के माध्यम से मानसिक शातात्मक एवं नैतिक विकास में भी इसका महत्वपूर्ण योगदान है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जनसंख्या वृद्धि, बेरोजगारी, श्रम से पलायन आदि समस्याओं को देखते हुए शैक्षिक क्षेत्र में आवश्यकतानुसार परिवर्तन को अनुभव किया गया और उसी के अनुसार नई राष्ट्रीय शिक्षा निति 1986 में समाजोपयोगी उत्पादन कार्य की अवधारणा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने का सर्वसम्मति से अभिशंसित किया गया। इन्हीं बातों को ध्यान मे रखते हुए डाइट का कार्यानुभव प्रभाग निम्न कार्य कर रहा है :–

प्रभाग का कार्य :–

स्थानीय वातावरण में उपलब्ध सामग्री का सदुपयोग करते हुए कार्यानुभव के विभिन्न विषयों क्षेत्रों में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को प्रशिक्षित करना।

प्राथतिक/उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षाक्रम के अनुरूप समाजोपयोगी उत्पादक कार्य विषय में नवीन पाठ्यक्रमानुसार शिक्षण सामग्री, मूल्यांकन उपकरणों/ विधियों/तकनीकों का इन क्षेत्रों में विकास करना है।

कार्यानुभव क्षेत्रों के लिए उचित सेवारत अभिनवन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना।

संस्थान के अन्य सभी कार्यक्रमों एवं क्रियाओं में कार्यानुभव व कला शिक्षा विषय संबंधी योगदान करना।

संस्थान परिसर का सौन्दर्यीकरण,वाटिका निर्माण, वृक्षारोपण व उनका रख–रखाव व विकास संबंधी क्रियाओं का आयोजन करना।

उच्च प्राथमिक स्तर के शारीरिक शिक्षकों को प्रशिक्षित कर, छात्र–छात्राओं में स्वास्थ्य शिक्षा, सफाई के बारे में जानकारी देना।

उद्देश्य :–

बालकों मे श्रम के प्रति निष्ठा, सम्मान एवं श्रम करने की आदतों का विकास करना।

बालकों को सृजनशील एवं स्वावलम्बी बनाकर स्वरोगाार के लिए प्रेरित करना।

बालक–बालिकाओं में अपनी संस्कृती, लोक परम्पराओं एवं ऐतिहासिक कलात्मक धरोहर के प्रति लगात पैदा करना।

सृजनात्मकता एवं मौलिकता को अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करना।

व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता, व्यायाम, आराम, निद्रा, आसन योगाभ्या, भोजन आदि से संबंधित स्वास्थ्यप्रद आदतों का विकास करना।

सहयोग, अनुशासन, मातृत्व–भाव, समूह सद्भाव, धैर्य साहस आदि चारित्रिक, गुणों का विकास करना।

दैनिक जीवन में काम आने वाले घरेलू उपकरणों के रख–रखाव की तकनीकी का ज्ञान कराना।

भारतीय संस्कृति व मानवीय मूल्यों का विकास कर सम्मान करने की भावना जगाना।

उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति में शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। कुशल शिक्षक तैयार करने के लिए प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण, कार्यानुभव प्रभाग आयोजित करता है। पशिक्षण के परिणामस्वरूप शिक्षक अपने भीतर एक मूल्यनिष्ठ सृजक एवं जिज्ञासु व्यक्तिव को विकसित कर सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में एक प्रगतिशील प्रतिनिधि के रूप में स्थापित होता है।

कार्यानुभव प्रभाग शिक्षाक्रम के दिशानिर्देशानुसार, कला शिक्षा विषय, कार्यानुभव विषय व स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा विषय संबंधी पाठ्यक्रम के अधिगम क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए प्रशिक्षण आयोजित करता है।

कार्यानुभव प्रभाग

क्र. सं.	कार्याक्रम का नाम	कार्यक्रम का शीर्षक	उद्देश्य	स्तर	विशेष विवरण
01	प्रशिक्षण	1. **सर्व धर्म प्रार्थना व प्रार्थना सभा का प्रभावी आयोजन**	**बालकों में ईश्वरीय चिन्तन, नैतिक गुण एवं सर्वधर्म समभाव उत्पन करना। बालकों में स्व अनुशासन, समय की पाबन्दी, मौखिक अभिव्यक्ति प्रदान करने की क्षमता, राष्ट्रीय/ अन्तराष्ट्रीय समस्याओं को सारेमच करने का कौशल आदि भातिक (शारीरिक) तथा चारित्रिक गुणो का विकास करना।**	प्रा./उ.प्रा.स्तर	**सप्ताहार प्रार्थनाओं का अभ्यास राष्ट्रगीत व राष्ट्रगान का अभ्यास देशभक्ति गीत व नैतिक अवरोध गीत का अभ्यास**
		2. कार्यानुभव विषय आधारित – **अ. सन्दर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण** **ब. विषय शिक्षक प्रशिक्षण**	**अध्यापक द्वारा बालकों में श्रम के प्रति निष्ठा, सम्मान एवं श्रम करने की आदतों का विकास करना।** **अध्यापक द्वारा :–** **परिवार, समाज एवं राष्ट्रहित के कार्यो को बालकों द्वारा निष्ठापूर्वक करने की प्रवृत्ति का विकास करना।**	मा.वि./ उ.प्रा. स्तर उ.प्रा.स्तर	**कार्यानुभव विषय – अधिगम क्षेत्रों के आधार पर हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कराना।**
		3. **कला शिक्षा विषय संबंधी –** **अ. सन्दर्भ व्यक्ति प्रशिक्षण** ब. विषय षिक्षक प्रषिक्षण	**अध्यापक द्वारा बालकों में अपनी संस्कृति एवं लोक परम्पराओं के प्रति लगाव पैदा करते हुए बालकों को सृजनात्मक मौलिकता व अभिव्यक्ति को अच्छे रूप में विकसित करने के अवसर प्रदान करना।**	उ.प्रा.वि./मा.वि. उ.प्रा.वि./प्रा.वि.	कला षिक्षा विषय – अधिगम क्षैत्रों के आधार पर सामग्री तैयार कराना।
		4. **स्वास्थ्य एवं शा.शिक्षा –** अ. योग व शारीरिक एवं स्वास्थ्य षिक्षा संबंधी ब. स्वास्थ्य एवं शारिरीक षिक्षा संबंधी	**बालकों का शारीरिक,मानसिक एवं भावात्मक विकास कर जीवन मूल्यों को स्थापित करने में सहयोग देना।** **बालकों में स्वस्थ आदतों का विकास करना।** **बालकों में स्वस्थ मनोरजंन की भावना का विकास करना।**	उ.प्रा.वि./प्रा.वि.	**योगासन का अभ्यास हस्तलिखित पुस्तिका तैयार कराना।**
02	कार्यगोष्ठी	**1. अनुपयोगी सामग्री द्वारा कलात्मक एवं सृजनात्मक शैक्षिक सामग्री निर्माण**	**अध्यापक द्वारा बालकों में अपनी सूझ–बूझ व परिश्रम से अनुपयोगी सामग्री से आकर्षक व कलात्मक गृहोपयोगी वस्तुएँ व शैक्षिक सामग्री निर्माण कर सकने का कौशल व रूचि विकसित करना।**	प्रा./उ.प्रा.वि.	**अनु. कॉपियों, गत्ते, डिब्बे, चूडियां, राखियां, लेस, बल्ब, सूतली, ऊन आदि का उपयोग करना।**
		2. कार्यानुभव विषय आधारित चार्ट, पोस्टर, फोल्डर निर्माण	**अध्यापक द्वारा बालाकों को सुगमता से उपलब्ध साधन सामग्री का उपयोग कर अपने मनोभावों को कलात्मक रूप में अभिव्यक्त करने के अवसर प्रदान करना।**	प्रा./उ.प्रा.वि.	**पाठ्य वस्तु सम्बन्धी व स्थानीय वातावरण सम्बन्धी**
		3. **कला शिक्षा सम्बन्धी–मांडने, मेहन्दी कॉलाज व रंगोली सम्बन्धी फलेश कार्ड निर्माण**	**अध्यापक द्वारा बालकों में अपनी संस्कृति एवं लोक परम्पराओं के प्रति लगाव एवं सम्मान की भावना विकसित करना।**	प्रा./उ.प्रा.वि.	राजस्थानी संस्कृति संबंधी

क्र. सं.	कार्याक्रम का नाम	कार्यक्रम का शीर्षक	उद्देश्य	स्तर	विशेष विवरण
03	प्रसार	1. बालकों द्वारा निर्मित कार्यानुभव सामग्री की जिला स्तरीय प्रतियोगिता (सृजनात्मक आकृतियां, चित्रकला,रंगोली, मेहन्दी)	कार्यानुभव विषय के प्रति सकारात्मक सोच उत्पन्न करना। सृजन क्षमताओं का विकास करना।	उ.प्रा.वि.	प्रत्येक ब्लॉक से प्रथम आने वाले छात्र–छात्रा को डाइट बजट से पुरस्कार दिये जायेंगे एवं भाग अपने वालों को प्रमाण पत्र
		2. विद्यालय अवलोकन एवम् विद्स्थलीय मार्गदर्शन	शिक्षा में निहित उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु अध्यापकों को जाग्रत करना।	प्रा./उ. प्रा.वि.	विद्यालयी निरीक्षण वर्ष में 10 संस्था प्रधानों की वाकपीठ संगोष्ठी में वार्ता देना।
		3. कार्यानुभव, कला, शा.शि., संबंधी अनुवर्तन व मार्गदर्शन	नई विधाओं से सभी को अवगत करना।	प्रा./उ. प्रा.वि.	
		4. कार्यानुभव प्रभाग द्वारा निर्मित सामग्री से ''आर्ट कॉर्नर'' स्थापित करना।	अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना।		
04	प्रकाशन	कार्यानुभव/कला शिक्षा/ स्वास्थ्य शारीरिक शिक्षा संबंधी फोल्डर निर्माण	अधिकाधिक अध्यापकों व छात्रों को जानकारी देना।		शिक्षाक्रम को आधार मान कर।
05	अनुसंधान/ क्रियात्मक अनुसंधान	कार्यानुभव/कला शिक्षा विषय में आवश्यकतानुसार अनुसंधान			

अधिगम क्षेत्र :–

विषय – कार्यानुभव शिक्षा

कक्षा 6 से 8 तक अधिगम क्षेत्र	कक्षा 1 से 5 तक अधिगम क्षेत्र
1. सृजनात्मक कार्य	1. स्वच्छता
2. उत्पादक कार्य	2. सेवा एवं सामुदायिक कार्य
3. दैनिक जीवन में उपयोगी उपकरणों का रख–रखाव	3. कृषि एवं बागवानी
4. स्वावलम्बी बनाने वाले कार्य	4. साज–सज्जा
5. सेवा एवं सामुदायिक कार्य	5. उत्पादक कार्य

उद्देश्य :–

प्रशिक्षित अध्यापक–छात्रों में दैनिक जीवन में आवश्यकतानुसार सिलाई–बुनाई, कढ़ाई–कताई एवं हस्तशिला के कार्य करने की क्षमता का विकास कर सकेगा।

छात्रों को अपने कार्य में व्यवस्था, सफाई, सजावट एवं सुन्दरता लाने को प्रेरित कर सकेगा।

छात्रों में अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी सामग्री बनाने की क्षमता का विकास कर सकेगा।

घरेलू व्यवसायों को अपनाने की अभिवृत्ति का विकास कर सकेगा।

परिवार, समाज एवं राष्ट्रहित के कार्यों को निष्ठापूर्वक करने की प्रवृत्ति विकास कर सकेगा।

विषय – कला शिक्षा

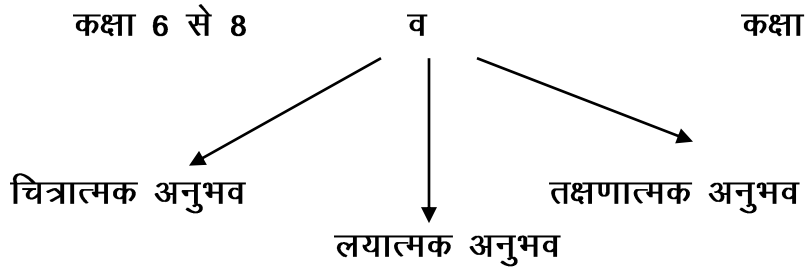

विषय – स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा

कक्षा 6 से 8	कक्षा 1 से 5
1. स्वास्थ्य शिक्षा	1. स्वास्थ्य शिक्षा

2. प्राथमिक उपचार एवं सुरक्षा शिक्षा	2. शरीर के विभिन्न अंगो का स्वतंत्र संचालन
3. संतुलित एवं शुद्ध भोजन	3. अनुकरणीय प्रवृत्तियाँ
4. सामुदायिक स्वास्थ्य एवं पर्यावरण	4. करतब एवं जिमनास्टिक
5. शैक्षिक व्यायाम	5. योगा
6. करतब, पिरामिड्स एवं जिम्नास्टिक्स	6. खेल
7. योगिक प्रक्रियाएं	
8. मनोरंजनात्मक क्रियाएं	
9. मुख्य खेल	
10. एथलेटिक्स (दौड़ – कूद एवं फेंक)	

<u>प्रशिक्षित अध्यापक</u> :–छात्र मे मूलभूत प्रवृत्तियां, आंगिक क्षमता, गति एवं खेल कौशल का विकास कर सकेगा।

–छात्रों में सुनागरिकता, नेतृत्व एवं सामुदायिक व्यवहार की मनोवृत्ति का विकास कर सकेगा।

–छात्रों में व्यक्तिगत स्वास्थ्य के लिए स्वच्छता, व्यायाम, आराम, निद्रा, आसन भोजन आदि से सम्बन्धित स्वस्थ आदतों का विकास कर सकेगा।

<u>सामग्री निर्माण</u> :–

1. द्वि आयामी रचनाएं शिक्षा एवं	:–	A. कार्यानुभव विषय, कला शिक्षा विषय व स्वा. शा. शिक्षा विषय संबंधी चार्ट्स व फलैश कार्ड
		B. छायांकन एवं मेहन्दी माण्डनें
		C. कॉलाज
		D. माण्डने, अल्पनाएँ व रंगोली
		E. पोस्टर
		F. एलबम
2. त्रि आयामी रचनाएँ	:–	A. मिट्टी–कुट्टी एवं पेपर मेशी से बनी रचनाएं

B. मुखौटे

C. प्लास्टर ऑफ पेरिस मेशी से मूर्ति/गुलदस्ते

D. कपड़े व कागज से आकृतियाँ

3. अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी सामग्री :– A. फ्यूज बल्ब व रूई से आकृतियाँ

B. डिब्बों से फूलदान व पेन स्टैण्ड

C. शादी के कार्ड से ग्रीटिंग कार्ड व पेन स्टैण्ड

D. ऊन व सूतली से आकृतियाँ

E. नारियल से आकृतियाँ ..... अन्य(क्षेत्रवार उपलब्ध अनुपयोगी सामग्री से)

4. कशीदाकारी/फैब्रिक पेन्टिंग :– सोफा कवर/मेजपोष/ रूमाल व अन्य

5. दैनिक उपयोग की खाद्य सामग्री :– अचार, मुरब्बा, सॉस, सूखे ऑवले, शर्बत, आलू की चिप्स आदि।

6. दैनिक उपयोग की वस्तुएं :– सर्फ, दन्त मंजन, बर्तन साफ करने की तरल व ठोस सामग्री आदि।

प्रभाग की विशिष्ट उपलब्धियाँ :–

स्थानीय वातावरण में उपलब्ध सामग्री का सदुपयोग करते हुए कार्यानुभव के विभिन्न विषयों क्षैत्रों में प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालय के शिक्षको को प्रशिक्षित किया।

प्राथतिक/उच्च प्राथमिक विद्यालयों में समाजोपयोगी उत्पादक कार्य/ कला शिक्षा विषय में सहपाठी समूह व स्व. मूल्यांकन विधा की जानकारी अध्यापकों को शिविर व विद्यालयी निरीक्षण के अन्तर्गत कराई गई।

संस्थान परिसर का सौन्दर्यीकरण, वाटिका निर्माण व वृक्षारोपण कार्य में सहयोग।

प्रभाग का ''आर्ट कॉर्नर'' शिविरार्थियों व छात्रों में सृजनात्मकता, मौलिकता व सौन्दर्यबोध जैसे गुणो को विकसित करने में सहायक रहा।